हिन्दी-साहित्य के निर्माण-समकाल( १५ की ओर १६ की सतारुदी)

मंदरा-मालिक के तत्त्व

विषय-विवरण

पुस्तक रूप्या

मुक्किता अध्याय

प्रथम कन्याय

९ - १०

नव वन्याय

१० - ५६

ब्रह्म का स्वरूप

ब्रह्म की कौशल्या यथा का पापमत, परंपर व्रल- प्राकृतिक अक्षिप्त्यान में

देवत्य की कल्पना, बढ़ुदेव यथा की प्रतिक्षा, लोकिक यथा पार्लोकिक

वन्यक्ष देवमालय रूप, रूपासलय की ओर कुर्वाव, सप्त मोहन वस्तुयां

का दाता, उपर श्रवलय, व्यक्तिक यथा व्यावस्थल परम, वार्त्य यथा परमात्म

तत्त्व का विशेष यथा बन्ध, पूर्ण तथा अक्य रूप, वर्णनीय निराकार

नहीं शाखार रूप, उपनिषद्यां में दोन रूपों का प्रतिपादन, गौता निर्णेक

पिता यथा- वस्तुं: व्यक्तिक, व्यक्तिक यथा व्यक्तिक की बीचता : ऊबर होने के

कारण, ब्रह्म स्वरूप का जातात्त्व, गौता यथा दारा भाष्य, कवियोजियों

में मालावान् श्रीफ, व्यक्तिक निर्मूल व्रल के सारण व्यक्तिक ब्रह्म की उत्पति,
शाकारोपाष्णा का विषेशात्मक कारण, कारण-कार्य काल्पना,
पुराण प्रतिपाद ब्रह्म- शाकार के प्रथम रूप, शाकार तथा निलकार
की व्यवस्था।

द्वितीय कष्ट्याय ५५ - ६२

उपाष्णा का स्वरूप

उपाष्णा का क्या एवं द्वितीय- बर्मन एवं प्राकृतिक
शक्तियों की पूजा, तत्त्व वाहित्य का मनाव, उपाष्णा
का विकास, दक्षिण नाग के नृत्य भ्रम, दक्षिण देव दिव एवं
बिष्णु, उपाष्णा मात्र के चार विस्ताराय, धर्मव्युग्ला
की मानना, मुख्य वामन के परिवर्तन, विविध विभाग,
कहीं का मात्र- उपाष्णा का स्वरूप, उपाष्णा की कैदी
मक्खी पद्धति, उपाष्णा स्वरूप, उपाष्णा के लिए वाचार,
रागालृकिका मक्खि का उद्य, नारातक र्यारे त्वा
की वास्तविकता, रागालृकिका मक्खि भाषण नहीं, विलुप्त
वाच्य, रागालृकिका मक्खि के पारं पैदा, वर्मालुक्का पवालुक्का
भाव, पूर्वाक्षु के तीन पैदा, पूर्वाक्षुका वाल्का भाव,
रागमयी मक्खि का उदेश्य, मक्खि भगवान की दक्ष ही,
उच्च मक्खि की उपाष्णा, रागालृकिका मक्खि के पैदा,
भाव भक्ति के लक्षण।
भुरोपाण्य सा सास्त्रीय विवेचन

भुरा मंकिल बया है ? निविद्विमाणियों व्याक्तियों के वरिष्ठ नहीं, प्रभावित द्वारा माहूर भाव की खूबी, बातचीत-परमाणु का मिलन समस्त धर्म का प्रतिपाल विषय, महत्त्व-हीराशा दर्शन में महूरा मंकिल, जहू जगतु कितु । जगतु का प्रतिविम्ब, कितु वरिष्ठ जगतु के रस-व्यापार, महुर रस के बालम्बन व बाथ, महूर रस की बातचीत या स्थायी माहूर की परिवर्तन तथा मनोवैज्ञानिक अर्थं, कृष्ण वाक्य में पश्चिम भाव, वैकुण्ठ- गोलिक में स्वतंत्र या पश्चिम भाव, गोलिक व्याकरण का यह मात्र स्वभाव महुरा मंकिल, पश्चिम महोपम सह उपासना का श्रेष्ठ, गोपी मात्र की सम्भावना, महुरामंकिल के बालम्बन विपाक, उदयन्त विभाजन, अनुभाव, साततिक माहूर, मंकिल रस, नापुष्पा में, मात्र के कुलार महुरा मंकिल के में, गुड़द भाव-नकों की सामान्य विशेषता, नारी पुरुष दोनों में दोनों तत्त्वों की सीमात, परालोक जगतु में भी तोतिक जगतु के पुरुष नारी में की ख्यात।
महुरोपाध्यय की परम्परा

वेदों में माधुर्योपाध्यया, वैदिक या पाण्डुळ में महुरोपाध्यया,
ब्रह्मचर्यकालीन महुरोपाध्यया - बौद्ध धार्मिक में महुरोपाध्यया,
कृष्ण विलास, सिद्ध-धार्मिक पद्धति में महुत नाम - श्रद्धा वर्ण
घनत्व, कपालिक तथा नाम-धार्मिक में महुत नाम,
वैष्णव सम्प्रदाय में महुर भक्ति, पक्षीया रूप में श्रद्धा
धार्मिक का स्वरूप, दिव्य कुल का उद्घाटन, वृद्धार्थी वैष्णव
सम्प्रदाय में महुर भक्ति, पक्षीया वैष्णव सम्प्रदाय में
माधुर्योपाध्यया, रीतिकालीन भक्ति में माधुर्य नाम, वायुकिन्द्र
कृष्ण भक्ति में माधुर्य नाम, निर्मुद्रीन सन्तों पर माधुर्य नाम
का स्मारक।

कौटी की उपाध्यया पद्धति

निरुपण सम्प्रदाय के प्रत्येक कुटीर, सन्त उपाध्यया को
प्रामाणित करने वाले धर्म स्वरूप सम्प्रदाय, वैदिक धर्म,
वैष्णव धर्म, सन्तों पर वैष्णवों के अस्तित्वाद का
स्मारक, विभिन्न क्षेत्रवाह विषयक विचार, क्षेत्रों
के विरोध का कारण, वैष्णवों की भक्ति का स्मारक,
योग का प्रचार, जैसे मकार की जागरूकता पदार्थों के मकरणा का मनोन्यायानिक रहस्य, सुरत रूप योग, सुरत तथा काम का कार्य, निरति, लक्षन वस्तु, वैक्य निकाय महत्त्व, वैक्य की महत्त्व पूर्वोत्तम सत्य दान, महत्त्व- हुस्तराष्ट्र।

चौथा अध्याय

निरुपण समाधान मे मधुरा महत्त्व के तत्त्व

निरुपणों का प्रम तत्त्व- मधुरा रति का स्वायत्
माच- मधुरा रति- वस्तु की रति - वस्तु की रति
के बालमनण- निरुपणोपाधरं मक्ख वस्तु का राम-
श्रीगृहोपाधरं मक्ख वस्तु का राम- तुलकी वैयक क्षेत्र का
मत में- निरुपण यदि कुंभव गर्व है तो उपाचर्य मी-
वस्तु की मधुरा रति के उद्दीपन- विपण- वस्तु का
स्वभाव: प्रम - वस्तु की नायिका- वस्तु की नायिका-
मंगल शास्त्री विशेषताप्री- नायिका के प्राचीनतपति
भक- वस्तु का भूमापुराण- विक्षाप- वस्तु राष्ट्र मे
विरह की दशायें - संयोगावस्था का विचरण -
वन्नों की मधुरा रति के पोषण विभिन्न संबारी माव - घृंगार रख रख मधुर रख में बन्तर - घस्थ्या रख मधुरा मक्खल - निरुषिणियों की मधुरा मक्खल गत विशेषता - वन्नों के माध्यम माव बपनाने का रहस्य

लक्ष्मण लक्ष्मण - भारतीय वन्नों की धारा

परिशिष्ट

संहार ग्रन्थों की लूंकी